रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन के नए मुख्यालय के उद्‌घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

दिनांक 14 मई, 2006
नई दिल्ली

मैं विंसटन चर्चिल से सहमत हूं जिन्होंने एक बार कहा था, "भविष्य का साम्राज्य शक्ति का साम्राज्य बनने जा रहा है।" हम एक ऐसे विश्व में रह रहे हैं जहां मानव ज्ञान और वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय ज्ञान अप्रत्याशित गति से आगे बढ़ रहा है। कहना न होगा कि आज विश्व ऐसे क्षितिज पर खड़ा है जहां किसी राष्ट्र की ताकत और सम्पदा काफी कुछ इन बातों से निर्धारित होगी कि उसकी ज्ञान तक कितनी पहुंच है, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकीय ज्ञान के मोर्चे पर आगे बढ़ने के लिए उसके पास कितनी क्षमता है। इस परिप्रेक्ष्य में उस कार्य को भी देखा जा सकता है जो रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन द्वारा किया जा रहा है और जिसका बहुत अधिक राष्ट्रीय महत्व है। आज सुबह जो कुछ मैंने देखा वह सृजनात्मकता, प्रतिबद्धता तथा कर्तव्यनिष्ठा का एक उदाहरण है और मैं उन सभी ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिकों और तकनीशियनों को बधाई देता हूं जिन्हें आज ये प्रतिष्ठित पुरस्कार दिए गए हैं। मुझे पूरी आशा है कि इनके उदाहरण से इनके अन्य सहयोगी भी आने वाले वर्षों में इसी तरह की योग्यताएं हासिल करने के लिए प्रेरित होंगे। जिन लोगों ने ये पुरस्कार प्राप्त किए हैं मैं उनके परिवार वालों को भी बधाई देता हूं जिन्होंने घर पर सुखद और अनुकूल माहौल बनाए रखकर इन्हें अपना सहयोग दिया।

इसलिए, मुझे इस राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस पर एक बार फिर आपके बीच आकर वाकई खुशी हो रही है। यह मेरे लिए और भी खुशी की बात है कि इस सुन्दर और नए अत्याधुनिक भवन, जो रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन का मुख्यालय होगा, का आज उद्‌घाटन करने का आपने मुझे सौभाग्य प्रदान किया है। उच्च गुणवत्तायुक्त यह भवन ल्यूटिन्स की दिल्ली की शैलीगत उत्कृष्टता और आधुनिक शिल्पकला का अदभुत मिश्रण है। यह हमारी प्राचीन सभ्यताई लोकाचारों और हमारे युवा तथा उभरते आधुनिक राष्ट्र के बीच सामजस्य का प्रतीक है। इसी तरह, रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन भी प्रौद्योगिकीय उत्कृष्टता, दक्षता और अभिनवता का एक नया प्रतिमान है जो वैज्ञानिक क्षमता की ठोस बुनियाद पर टिका है। मैं दिल्ली के सुरम्य मध्य हिस्से में इस एक और नए भवन के बनने पर रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन को बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि वाले वर्षों में यह भवन आपको मातृभूमि की सेवा करने के आपके प्रयासो में और अधिक सफलता प्रदान करेगा।

आज अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग में उत्कृष्टता को मान्यता देने का भी एक वार्षिक अवसर है। यह एक ऐसा मौका है जब हमें बाहरी और आंतरिक मोर्चों पर एक सुरक्षित और स्थायी माहौल बनाने के पुनीत कार्य में अपने आपको फिर से लगा देना है ताकि तेजी के साथ और सबके लिए आर्थिक तथा सामाजिक विकास के लक्ष्य को हासिल किया जा सके। और अंत में, जो कम महत्वपूर्ण नहीं है, यह एक ऐसा अवसर भी है जब हमें उत्कृष्टता के उच्च मानकों को हासिल करने तथा स्वदेशी क्षमताओं से प्रौद्योगिकीय चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए अपने आपको समर्पित करना है। हमारे राष्ट्रीय उद्देश्यों को हासिल करने के लिए हम में से हर कोई महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसलिए, जब हम पीछे मुड़कर आजादी के बाद के दशकों की ओर देखते हैं तो हम रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन के वैज्ञानिकों और इंजीनियरों द्वारा दिए गए योगदान पर बड़ा गर्व कर सकते हैं। आप में से जिन लागों ने आज पुरस्कार प्राप्त किए हैं वे एक सच्चे कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से बधाई और सराहना के उपयुक्त पात्र हैं।

रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन ने कृषि से लेकर अंतरिक्ष तक के विभिन्न क्षेत्रों में सफलताएं अर्जित की हैं। राष्ट्र आपके इन प्रयासों के लिए आपका कृतज्ञ है। यह केवल आपकी उपलब्धियों के कारण ही नहीं बल्कि उन परिस्थितियों को देखते हुए भी है जिनमें रहकर आपने अपना योगदान दिया। हमारे वैज्ञानिक प्रतिष्ठान ने सर सी.वी. रमण जैसी असाधारण प्रतिभाओं के समय से लेकर आजादी के बाद डॉ0 होमी भाभा तथा डॉ0 डी.एस. कोठारी, जिनकी स्मृति में इस ऑडिटोरियम का नाम रखा गया है, जैसे दूरदर्शी वैज्ञानिकों तथा उन वैज्ञानिकों तथा नेताओं जो रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन और परमाणु ऊर्जा एवं अंतरिक्ष विभागों के अध्यक्ष रहे हैं, तक एक लम्बे समय तक सेवा-भावना का परिचय दिया है। सौभाग्य से इनसे से कुछ दूरदृष्टा आज हमारे साथ मौजूद हैं। मार्ग प्रशस्त करने वाली आपकी भावना के लिए इससे बेहतर तोहफा और क्या हो सकता है कि इन देशभक्त दूरदर्शियों में से एक आज हमारे देश के प्रथम नागरिक हैं।

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई है कि ग्यारहवीं और बारहवीं योजना अवधियों में रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन ने उत्पादों और प्रौद्योगिकियों की एक नई श्रृंखला सृजित करने का लक्ष्य रखा है। इनमें प्रणोदन प्रणालियों की अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियां, कैमुफ्लेज तथा स्टील्थ प्रौद्योगिकियां, सेंसर एवं माइक्रो-इलेक्ट्रोमेकेनिकल प्रणालियां, प्रिसिजन-गाइडेड म्यूनिशन, रोबोटिक्स तथा मानवरहित वाहन प्रौद्योगिकियां शामिल हैं जो इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपके बढ़ते विश्वास को दर्शाती हैं। यह विश्वास उन चुनौतियों से निपटने के लिए जरूरी है जो सैन्य और दोहरे इस्तेमाल वाली प्रौद्योगिकियों के विकास तथा दुनिया में विश्व-व्यवस्था के लिए खतरा बनती जा रही बेलगाम ताकतों के कारण पैदा हो रही हैं।

एक स्थायी और शासन आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के विकास को देखते हुए हमारे सुरक्षा प्रतिष्ठान को अपने खतरे के आकलन की लगातार समीक्षा करते रहने और आने वाले संभावित खतरों से सक्रियता के साथ निपटने के लिए तैयार रहने की जरूरत है। इसलिए हमें संबंधित ज्ञान और दक्षता हासिल करनी होगी, नई क्षमताओं का विकास करना होगा और नए उत्पादों तथा प्रणालियों का सृजन करने हेतु अपनी औद्योगिक क्षमताओं को बढ़ाना होगा ताकि हमारे समक्ष उत्पन्न इन चुनौतियों का मुकाबला किया जा सके। मुझे विश्वास है कि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, भारतीय उद्योगों को अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी पर जोर देने के लिए प्रेरित करेगा।

इसके साथ ही साथ, मैं यह भी समझता हूं कि आज के प्रतिस्पर्धी माहौल में हमारे लिए यह जरूरी है कि हम अपने प्रमुख प्रौद्योगिकी विभागों से वैज्ञानिक प्रतिभाओं के पलायन को रोकने के नए तरीकों के बारे में सोचें। यह सही है कि रोजगार के प्रतिस्पर्धी अवसरों से वेतनमान और परिलब्धियां अधिक होंगी, फिर भी, मैं समझता हूं कि सरकार को अत्याधुनिक विभागों में काम करने के माहौल को अधिक आकर्षक बनाने के तरीके ढूंढ़ने होंगे। मैंने अपने वरिष्ठतम अधिकारियों से कहा है कि वे विज्ञान और प्रौद्यागिकियों में कैरियर को हर तरह से आकर्षक बनाने के लिए उपाय करें। प्रधानमंत्री की वैज्ञानिक सलाहकार परिषद भी इन विषयों पर चर्चा कर रही है। वित्तीय और कैरियर प्रोत्साहनों के अलावा, हम संस्थानों के बीच, संस्थानों और अकादमियों के बीच तथा साथ ही साथ अनुसंधान संस्थानों से लेकर उत्पादन एवं विपणन क्षेत्रों तक गतिशीलता बनाए रखने पर विचार करना चाहते हैं। लेकिन, यह कोई अप्रतिबंधित अधिकार नहीं हो सकता बल्कि इसे जिम्मेदारी के साथ अमल में लाना होगा। इसी तरह, हम यह भी मानते हैं कि जिस बुनियादी कार्यबल को अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों की जरूरत है, वह हमारे देश में प्रमुख रूप से सरकार द्वारा वित्तपोषित होगा। हम ऐसे तरीकों का भी पता लगाएंगे जिससे इस समय अनुसंधान सुविधाओं को सौंपे गए कार्यों का कुछ प्रतिशत, जहां संभव और उचित होगा, उद्योगों को सौंपा जा सके। इससे हमारे संस्थान, प्रौद्योगिकियों के विकास पर अधिक ध्यान केन्द्रित कर सकेंगे जबकि अनुप्रयोगों, औद्योगिकीकरण और इससे जुड़े पहलुओं की जिम्मेदारी उद्योग उठाएंगे।

अब मैं अपने अगले विषय पर आता हूं। किसी राष्ट्र की सुरक्षा के लिए यह जरूरी है कि आत्मनिर्भर औद्योगिक परिसर में एक बड़ा बुनियादी ढांचा खड़ा किया जाए जिसमें पर्याप्त रूप में मिलिटरी हार्डवेयर, संचार प्रणालियां और प्रशिक्षित लोग हों। यह उन क्षमताओं पर निर्भर करता हैं जो प्रौद्योगिकी को अपनाने/अनुकूल बनाने, क्षमता का विकास करने और सृजनशीलता तथा नई पहल को बढ़ावा देने हेतु उचित माहौल तैयार करने के लिए सृजित की जाती हैं। इसके लिए, रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन के लिए यह जरूरी है कि वह उच्च्च प्रौद्योगिकी के विकास में विदेशी भागीदारों और घरेलू निजी क्षेत्र के साथ सहभागिता बढ़ाने की अपनी योजनाओं को आगे ले जाए जो कि इस समय विकास की अवस्था में हैं। इसके साथ ही, जहां संभव होगा, सरकार रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन और हमारे रक्षा सार्वजनिक क्षेत्र के

उद्यमों को रक्षा सौदों में बातचीत करने और प्रौद्योगिकीय दृष्टि से टिकाऊ तथा प्रामाणिक उत्पादों का, जहां संभव हो, निर्यात करने के आपके प्रयासों में मदद देगी। इन सभी प्रयासों से प्रौद्योगिकीय विकास और उसके अनुप्रयोग के जरिए रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन, हमारे सशस्त्र बलों और पूरे समाज को लाभदायक नतीजे हासिल होंगे।

वस्तुतः यह रक्षा प्रौद्योगिकियों का एक महत्वपूर्ण और अक्सर उपेक्षित पहलू है। एक कुशल और दक्ष उद्योग को प्रौद्योगिकियों के साथ जोड़ा जाना चाहिए ताकि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से वाणिज्यिक मूल्य को प्रयोगशाला तक लाया जा सके। इससे, जहां एक ओर हमारी रक्षा जरूरतों के लिए अधिक अनुकूल और लागत प्रभावी स्थानीय साधन पैदा होंगे और स्वदेशी डिजाइन क्षमताओं का परिपक्वता के साथ विकास होगा वहीं दूसरी ओर, असैनिक बाजार की जरूरतों की बेहतर समझ होने से रक्षा प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल अधिक असैन्य उत्पादों के लिए किया जा सकता है। ऐसे सामान से जो लाभ मिलेंगे उन्हें बेहतर और अधिक प्रभावी अनुसंधान में लगाया जा सकता है। इससे उद्योग, उपभोक्ता और हमारे रक्षा उद्योग के बीच एक नया रिश्ता कायम होगा और उससे सभी लाभान्वित होंगे। इस प्रकार के उदाहरण हर रोज के उत्पादों में देखे जा सकते हैं, चाहे वे स्पोर्ट्स शूज हों या माइक्रोवेव ओवन्स, ये सभी रक्षा क्षेत्र में उच्च-प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों के तहत मूल रूप से तैयार किए गए हैं।

दूसरा पहलू सार्वजनिक निवेश पर अधिक से अधिक लाभ अर्जित करना है। सरकार वर्षों से रक्षा उद्योग और हमारे बहादुर सशस्त्र बलों की निरंतर सहायता करती आ रही है जिसके लिए वह उन्हें समुचित वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती है। लगातार बढ़ते रक्षा व्यय, जिसे सकल घरेलू उत्पाद के एक उचित प्रतिशत तक बनाए रखा गया है, को इन महत्वपूर्ण राष्ट्रीय क्षेत्रों के लिए अलग-अलग निर्धारित किया गया है। फिर भी, यह हम सब के लिए भी जरूरी है कि हम राष्ट्रीय सुरक्षा प्रतिष्ठान में शामिल हों ताकि इन दुर्लभ राष्ट्रीय संसाधनों को ज्यादा से ज्यादा लाभ हासिल करने ओर अधिकतम मूल्य प्राप्त करने के लिए इस्तेमाल में लाया जा सके। मैं सलाह देने के तौर पर कहना चाहूंगा कि मैं समस्त सार्वजनिक क्षेत्र में लागत और अधिक समय की समस्याओं से चिंतित रहा हूं, जिसके कारण हमारा रक्षा उद्योग भी कुछ समय तक के लिए बाधित रहा है। मैं मानता हूं कि जिस प्रतिकूल माहौल में हमें कार्य करना है उसमें कोई विकल्प नहीं है। इसलिए, सामान्य लागत और लाभ के मानदंडों को प्रौद्योगिकी के इन नए अग्रणी क्षेत्रों में लागू नहीं किया जा सकता। लेकिन मैं महसूस करता हूं कि अपरिहार्य लागत और समय की अधिकता को कम से कम करने पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। यह सच है कि जिस परियोजना में लागत और समय अधिक लगता है, उसके लिए न केवल अन्य रक्षा परियोजनाओं के लिए अपेक्षित संसाधनों को ही, बल्कि देश के गरीब लोगों के लिए निर्धारित संसाधनों को भी मोड़ना पड़ता है। इसलिए, हमें इस मुद्दे पर थोड़ा ज्यादा सावधानी से ध्यान देने की जरूरत है।

मैं मानता हूं कि कभी-कभार ऐसी परिस्थितियों के कारण परियोजनाओं के पूरा होने में विलम्ब हो जाता है जो हमारे बस में नहीं होती। इसके अलावा बाह्य कारण भी होते हैं। मैं इस बात को भी मानता हूं कि कभी-कभी हमारी अपनी प्रक्रियाएं—वित्तीय प्रक्रियाएं—बोझिल हो सकती हैं और उनको पूरा करने में अपेक्षाकृत ज्यादा समय लग सकता है। इसके बावजूद, हमारे शानदार रिकॉर्ड के निष्पक्ष विश्लेषण से यह संकेत मिलेगा कि या तो हमारा शुरूआती समय और वित्तीय अनुमान वास्तविकता से मेल नहीं खाते या फिर परियोजनाओं के कार्यान्वयन की हमारी क्षमता को कहीं-कुछ फिर से परखने की जरूरत है। सौभाग्य से, मेरे वरिष्ठ सहयोगी और रक्षा मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी तथा उनके दल ने इस व्यवस्था को चुस्त-दुरस्त करने और पिछली सरकारों से लम्बित चले आ रहे मामलों को निपटाने के लिए गहन प्रयास शुरू कर दिए हैं। फिर भी, मैं कहना चाहूंगा कि हम में से हरेक की यह जिम्मेदारी है कि हम परिहार्य विलम्ब और अनावश्यक लम्बी प्रक्रियाओं को खत्म करने का प्रयास करें। इसलिए, हम अपने लक्ष्यों को तेजी के साथ, कार्यकुशल तरीके से और किफायती ढंग से हासिल करने का संकल्प लें।

अंत में, मैं कहना चाहूंगा कि मुझे पूरा भरोसा है कि रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन परिवार हमारे देश की अपेक्षाओं पर निरंतर खरा उतरेगा। मैं आप सभी को आश्वासन देता हूं कि हमारी सरकार आपके हरेक प्रयास में आपको सहायता देती रहेगी। मैं रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन के समस्त परिवार, विशेषकर जिन्होंने आज पुरस्कार जीते हैं, को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। पुरस्कार विजेताओं को मैं शाबाशी देना चाहूंगा। लेकिन, हमें इससे ही संतुष्ट होकर नहीं बैठे रहना है। आपको अपनी उपब्धियों से संतुष्ट होकर नहीं बैठ जाना है बल्कि, अपने आपको दक्षता की उस पराकाष्ठा तक पहुंचाना है जिससे आप अपने प्रयासों का अगला और ऊंचा लक्ष्य हासिल कर सकें। मेरी कामना है कि आप देश की निरंतर सेवा करते रहें और भारत को महान बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान देते रहें।।

....